International Journal of Humanities And Social Science Research
www.socialsciencejournal.in
ISSN: 2455-2070
Received: 05-01-2026, Accepted: 06-02-2026, Published: 21-02-2026
Volume 12, Issue 1, 2026, Page No. 232-234

ग्रामीण बिहार की महिलओं के वित्तीय आत्मनिर्भरता में जीविका स्वयं सहायता समूहों की भूमिका: एक समीक्षात्मक अध्ययन

डॉ. कमलेश कुमार
सहायक प्राध्यापक, स्नातकोत्तर अर्थशास्त्र विभाग, एच.डी. जैन कॉलेज, आरा, बिहार, भारत

सारांश
बिहार की कुल आबादी में आधी आबादी महिलाओं की हैं। ग्रामीण क्षेत्र की अधिकतर जनसंख्या आज भी कृषि पर निर्भर है। कृषि में सालोभर काम नहीं मिलने के कारण अधिकांश पुरुष रोजगार के तलाश में पलायन कर जाते है। उस परिस्थिति में घर–परिवार चलाने के लिए महिलाओं की भूमिका बढ़ जाती है। जहाँ बहुंत ही पेचीदा सामाजिक, आर्थिक समस्याए:– गरीबी, भूमिहीनता, सीमित रोजगार पारंपरिक लिंग भेद अधिक व्यापक है। इस शोध पत्र के माध्यम से हम जानने का प्रयास करेंगे की इन समस्याओं के बावजूद भी ग्रामीण बिहार की महिलाएं जीविका स्वयं सहायता समूहों (SHGS) से जुड़कर अपने–आप को आर्थिक रूप से कैसे आत्मनिर्भर बना रही है। साथ–साथ सामजिक, राजनीतिक एवं शैक्षणिक गतिविदियों में बढ़–चदकर अपनी उपस्थिति दर्ज करा रही है तथा परिवार एवं समाज के निर्णय प्रक्रिया में कैसे अपना सहयोग कर रही है। साथ ही इस शोध पत्र के माध्यम से जीविका स्वयं सहायता समूह के सदस्य महिलाएं एवं गैर सदस्य महिलाएं का भी तुलनात्मक विश्लेषण करने का प्रयास किया गया है।

मूलशब्दः ग्रामीण क्षेत्र, आर्थिक विकास, स्वयं सहायता समूह, वितीयआत्मनिर्भरता, निर्णय प्रक्रिया, जीविका दीदी, लिंग भेद।

प्रस्तावना
बिहार की अधिकांश आबादी आज भी ग्रामीण क्षेत्रों में निवास करती है। वर्ष 2023 के बिहार जाती जनगणना के अनुसार राज्य की कूल जनसंख्या 130,725,310 करोड़ थी। जिसमें से लगभग 89% जनसंख्या ग्रामीण थी। यहा शहरीकरण का दर बहुत कम है। वर्ष 2024 के अनुसार शहरीकरण का दर 17.1% है जबकि 2024 में ही कूल आबादी में शहरी आबादी 12.4% है। इसलिए बिहार का समग्र विकास ग्रामीण क्षेत्रों के आर्थिक और सामाजिक विकास पर अधिक निर्भर है। ग्रामीण विकास की अवधारण का तात्पर्य ग्रामवासियों के जीवन–स्तर में सम्पूर्ण सुधार से है। ग्रामीण बिहार की कूल आबादी में आधी आबादी महिलायों कि है, फिर भी लम्बे समय से बिहार राज्य की ग्रामीण महिलाएं आर्थिक रूप से पुरुषों पर निर्भर रही है। शिक्षा की कमी संसाधनों का अभाव सामाजिक एवं सांस्कृतिक बंधन और निर्णयों में भागीदारी की कमी उनकी आत्मनिर्भरता में बड़ी बाधाएँ रही है। सर्वविदित है की बिहार मुख्य रूप से कृषि प्रधान राज्य है जो यहाँ के लगभग 77% कार्यबल जनसंख्या को रोजगार प्रदान करती है और राज्य के सकल घरेलु उत्पाद में लगभग 20% का योगदान देती है। बिहार की कृषि मानसून पर निर्भर है इसीलिए कृषि क्षेत्र में मौसमी बेरोजगारी के साथ–साथ प्रच्छन्न बेरोजगारी भी पाई जाती है। जिस कारण से ग्रामीण क्षेत्रों में लोगो की आय बहुत कम होती है। यही कारण है कि बिहार से अन्य राज्यों में रोजगार के तलाश में लोगो का पलायन हो रहा है। इस परिस्थिति में घर–परिवार चलाने के लिए ग्रामीण बिहार की महिलाओं की भूमिका महत्वपूर्ण हो जाती है।

स्वयं सहायता समूह का गठन एवं उद्देश्य
बिहार सरकार ने वर्ष 2007 में महिलाओं को वितीय आत्मनिर्भर बनाने के लिए अनेक उपाय किये। इनमे सबसे महत्वपूर्ण और सार्थक पहल स्वयं सहायता समूहों का गठन है। सामान्य रूप से 10–15 महिलाओं को एक समूह में जोड़कर स्वयं सहायता समूह का गठन किया गया, ताकि महिलाओं की सामूहिक शक्ति से उनके परिवारों और उनके समाज की सामाजिक और आर्थिक तस्वीर बदली जा सके। महिलओं को आर्थिक सामाजिक और राजनैतिक रूप से सशक्त बनाया जाय ताकि अपने अधिकारों और अपने समुदायों में नेतृत्व निभाने में अपने आप को सक्षम समझे। इस समूहों में महिलाओं के आर्थिक एवं सामाजिक बदलाव लाने की अद्भुत क्षमता से नकारा नहीं जा सकता है। क्योंकि बिहार की ग्रामीण महिलाओं को स्वयंसहायता समूह ने सबसे पहले संगठित करने का काम किया। इसके बाद उनको वितीय साक्षरता प्रदान कर छोटे–छोटे ऋण और बचत के माध्यम से उन्हें आर्थिक गतिविधियों में भाग लेने के लिए सक्षम बनाया।

स्वयं सहायता समूह (जीविका दीदी के रूप में)
मुख्यमंत्री श्री नितीश कुमार ने स्वयं सहायता समूह से जुडी महिलाओं को जीविका दीदी के नाम से पहचान दिया। तब से स्वयं सहायता समूह से जुडी महिलओं को जीविका दीदी के नाम से जाना जाता है। जीविका दीदी के माध्यम से ग्रामीण बिहार में महिलाओं को रोजगार देने की शुरुआत की गई ताकि वे वितीय मामले में आत्मनिर्भर बने। जीविका के नाम से विख्यात बिहार ग्रामीण आजीविका प्रोत्साहन समिति (BRLPS) बिहार के ग्रामीण विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। बिहार में 31 जनवरी, 2025 तक 10,97,100 (10.97 लाख) स्वयं सहायता समूहों का गठन किया जा चूका है। यह जानकारी केन्द्रीय ग्रामीण विकास राज्यमंत्री डॉ० चन्द्रशेखर पम्मासानी द्वारा 11/02/2025 को लिखित उत्तर के माध्यम से सदन में दिया गया। राज्य की लगभग 1 करोड़ 40 लाख जीविका दीदी जीविका स्वयं सहायता समूहों से जुड़कर आत्मनिर्भर बन चुकी है। इस तरह से बिहार के जीविका दीदियों के बारे में कहा जा सकता है कि–

मैं अकेला ही चला था, जानिबे मंजिल मगर।
लोग साथ आते गये और करवा बनता गया।।

जीविका दीदियों ने अपने–आप को इतना सशक्त बना ली है कि कोविड 2019 के समय विभिन्न क्षेत्रों में अपनी सार्थक उपस्थिति दर्ज करावाई। दीदियां बिना थके बिना रुके निरंतर सेवा कार्य में लगी रही। कोरोना वॉरियर्स के रूप में इन्हें हर मोर्चे पर देखा गया। कठिन परिस्थितियों के बीच मास्क का निर्माण शुरू कर दिया। मास्क के उत्पादन एवं विपणन के साथ दीदियों ने मास्क के उपयोग पर निरंतर बल दिया। जिला प्रशासन स्वास्थ्य

महकमा मनरेगा पंचायती राज प्रतिनिधियों के बीच जीविका दीदियों द्वारा निर्मित मास्क को उपलब्ध करवाएं और राज्य में मास्क की किल्लत को कम किया गया। राज्य सरकार ने इस महत्वपूर्ण कार्य में जीविका दीदियों का सहयोग प्राप्त करने पर बल दिया और उसमें जीविका दीदियों ने सफलता प्राप्त की। आजकल बिहार सरकार की योजनाओं का लाभ आम जनता के पास जीविका दीदियों के माध्यम से आसानी से पहुंचा जा सकता है।

आर्थिक रूप से सशक्त

जीविका स्वयं सहायता समूह की प्राथमिक भूमिका में से एक आर्थिक सशक्तिकरण में उनका योगदान है। आर्थिक सशक्तिकरण को अक्सर नेतृत्व विकास की दिशा में पहला कदम माना जाता है। राज्य सरकार ने महिलाओं को आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर बनाने के लिए जीविका योजना का क्रियान्वयन किया है। इस योजना के तहत ग्रामीण बिहार की महिलाओं को जीविका स्वयं सहायता समूहों से जोड़ा जाता है। बिहार में इससे जुड़ी महिलाओं को जीविका दीदी के नाम से जाना जाता है। जीविका दीदी के माध्यम से ग्रामीण बिहार से गरीबी को खत्म करने की मुहिम की शुरुआत की गई। जीविका दीदियों को विभिन्न आर्थिक गतिविधियों में कार्य दिया जाता है। उनके द्वारा जमा की गई राशि पर राज्य सरकार की गारंटी पर बैंक ऋण देता है। इस राशि से जीविका दीदी कई तरह की आर्थिक गतिविधि करती है। ग्रामीण महिलाओं को जीविका दीदी के रूप में जोड़ने से ग्रामीण परिवारों को रोजगार और आय का स्रोत मिला है। इस ग्रामीण महिलाओं को प्रतिमा 10 से 12 हजार आय हो जाती है। इससे ग्रामीण बिहार की महिलाओं में आर्थिक और सामाजिक सशक्तिकरण हुआ है। मुख्यमंत्री श्री नीतीश कुमार ने महिलाओं को आत्मनिर्भर और सशक्त बनाने के लिए 21/06/2025 को महिला संवाद में यह घोषणा किया की जीविका परियोजना के तहत स्वयं सहायता समूह को तीन लाख से ज्यादा के बैंक लोन पर अब सिर्फ 7 फ़ीसदी ब्याज देना होगा। स्वयं सहायता समूह को पहले 3 लाख से ज्यादा के बैंक ऋण पर 10 फ़ीसदी से ज्यादा ब्याज देना पड़ता था। बिहार सरकार ने जीविका स्वयं सहायता समूह से जुड़ी दीदियों को आत्मनिर्भर बनाने के लिए एक और फैसला किया है कि अभी बिहार के आंगनबाड़ी केन्द्रों के 3 साल से 6 साल वाले बच्चों की पोशाक जीविका दीदियों द्वारा बनाया जाएगा। जिससे जीविका दीदियों को रोजगार उपलब्ध होगा और आर्थिक रूप से सशक्त होंगी।

महिलाओं के अंदर जागरूकता

जीविका स्वयं सहायता समूह महिलाओं के अधिकारों और सामाजिक मुद्दों के बारे में जागरूकता बढ़ाने के लिए एक मंच के रूप में कार्य करते हैं। स्वयं सहायता समूह अपने सदस्यों को उनके कानूनी अधिकारों स्वास्थ्य संबंधी मुद्दों और स्थानीय शासन में भागीदारी के महत्व के बारे में शिक्षित करने का काम करता है। जागरूकता से महिलाएं अपने अधिकारों और अपने समुदायों में नेतृत्व की भूमिका निभाने में अपने–आप को सक्षम समझती हैं। जीविका स्वयं सहायता समूह में जुड़ने से महिलाएं सामाजिक–राजनीतिक परिदृश्य और नागरिक जुड़ाव के लिए उपलब्ध तंत्रों के बारे में अधिक जानकारी प्राप्त करती है। यही जानकारी उन्हें स्थानीय निर्णय लेने की प्रक्रिया में भाग लेने अपनी चिताओं की आवाज देने और अपने समुदायों को लाभ पहुंचाने वाली नीतियों की वकालत करने के लिए सशक्त बनाता है। जैसे–जैसे महिलाएं इन सभी प्रक्रियाओं में अधिक सक्रिय होती जाती है वह सार्वजनिक स्थलों पर बोलने, बातचीत करने राणनीति और योजना बनाने सहित आवश्यक नेतृत्व कौशल विकसित करने में अपने आप को सक्षम समझने लगती है।

कौशल विकास

ग्रामीण बिहार की महिलाएं जो जीविका स्वयं सहायता समूहों से जुड़ी है उनके कौशल विकास के लिए सरकार द्वारा महत्वपूर्ण कदम उठाए गए हैं। जैसे– सिलाई, हस्तशिल्प, कृषि और व्यवसाय प्रबंधन जैसे विभिन्न क्षेत्रों में प्रशिक्षण प्रदान किया जाता है, ताकि प्रशिक्षित होकर अपना छोटा–मोटा व्यवसाय करके आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर बन सके। राष्ट्रीय ग्रामीण आजीविका मिशन (NRLM) के तहत स्वयं सहायता समूह के सदस्यों को कौशल विकास के लिए प्रशिक्षण प्रदान किया जाता है जिससे वित्तीय साक्षरता, लेखा–जोखा, व्यवसाय प्रबंधन और आय सृजन जैसे गतिविधियां शामिल है। इनके अंदर कौशल विकसित करने के लिए कुछ बैंक और वित्तीय संस्थान भी प्रशिक्षण प्रदान करते हैं, ताकि वह बचत, ऋण और वित्तीय सेवाओं का उपयोग कर आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर बन सके।

जीविका स्वयं सहायता समूह से लाभ

ग्रामीण बिहार की महिलाओं को जीविका स्वयं सहायता समूह के सदस्य बनने से वित्तीय आत्मनिर्भरता के साथ–साथ कई अन्य लाभ भी हुआ है

सामाजिक कुरीतियों से निपटना

जीविका स्वयं सहायता समूह दहेज, बाल–विवाह, शराबखोरी आदि जैसे समाज में व्याप्त कुरीतियों से निपटने के लिए सामूहिक प्रयासों को प्रोत्साहित करता है।

लैंगिग समानता

जीविका स्वयं सहायता समूह महिलाओं को सशक्त बनाता है और उनमें नेतृत्व कौशल विकसित करता है जिसका प्रभाव है कि आज ग्रामीण बिहार की महिलाएं हर क्षेत्र में अपनी उपस्थिति दर्ज कर रही है। परिवार एवं समाज की निर्णय प्रक्रिया में सहयोग कर रही है यहां तक ग्राम सभा, पंचायत, विधानसभा या लोकसभा का चुनाव हो उसमें अधिक सक्रिय रूप से भाग ले रही हैं। महिलाएं मतदान करने में भी पुरुषों से आगे रह रही हैं।

सरकारी योजनाओं और संसाधनों तक पहुंचे

सरकार जितनी कल्याणकारी योजनाएं चला रही है उन योजनाओं का अधिकांश लाभ लाभार्थी कमजोर और हाशिये पर पड़े समुदायों की भागीदारी, सामाजिक न्याय सुनिश्चित करती है। जीविका स्वयं सहायता समूह अक्सर गरीबी उन्मूलन और सामाजिक कल्याण के उद्देश्य से इन योजनाओं के बीच सेतु का काम करते हैं। आज स्वयं सहायता समूह के माध्यम से समूहों में संगठित होकर महिलाएं विभिन्न सरकारी कार्यक्रमों और संसाधनों तक पहुंचती है जिन्हें व्यक्तिगत रूप से प्राप्त करना मुश्किल हो सकता है। सहायता सेवाओं तक पहुंच उनकी सामाजिक आर्थिक स्थितियों को बेहतर बनाने की उनकी क्षमता को बढ़ाती है और उन्हें अपनी जरूरतों की वकालत करने की अधिकार देती है।

आवास और स्वास्थ्य पर प्रभाव

जीविका स्वयं सहायता समूह के माध्यम से प्राप्त वित्तीय समावेशन से बाल मृत्यु दर में कमी आई है। मातृ स्वास्थ्य में सुधार हुआ है और बेहतर पोषण आवास के माध्यम से गरीबों की बीमारियों से लड़ने की क्षमता बढ़ी है विशेष कर महिलाओं और बच्चों में।

प्रजनन दर में कमी

जीविका स्वयं सहायता समूह से जुड़कर जीविका दीदी साक्षर हो रही है। जिससे अब ग्रामीण महिलाएं विभिन्न कार्यक्रमों में शामिल हो रही है। 3 साल में 30 लाख से अधिक जीविका दीदियां

परिवार नियोजन को अपनाई। वो खुशाहाल परिवार के लिए एक या दो बच्चे पैदा कर रही है। जीविका दीदी जब साक्षर हुई तो प्रजनन दर में कमी आने लगी। राज्य के 30 लाख 75000 जीविका दीदियों को चिन्हित किया गया है जिन्होंने अपने परिवार को सीमित किया है। पहले इन परिवारों में 5 से 6 बच्चे पैदा होते थे, वहीं अब इन्हीं परिवारों की वर्तमान पीढ़ी एक या दो बच्चे तक सीमित है। एक एवं दो बच्चों वाली जीविका दीदियां आर्थिक रूप से मजबूत हुई जिससे अपने परिवार को बेहतर ढंग से चला रही है। एक या दो बच्चे वाली जीविका दीदियां केंद्र सरकार द्वारा चलाई जा रही मातृत्व वंदना योजना का लाभ ले रही है। इस लाभ को लगभग 5 लाख जीविका दीदियां ने उठाया है अब तीसरे बच्चे के लिए 50 फ़ीसदी से अधिक जीविका दीदी नहीं सोच रही है।

उद्यमी बनकर पलायन रोकना

आज जीविका दीदियां उद्यमी बनकर पलायन रोक रही है। जीविका दीदियां छोटे पैमाने पर कारोबार शुरू करने के बाद अपने परिवार को भी आत्मनिर्भर बना रही है। पिछले तीन वर्षों में 10 लाख से अधिक दीदियों ने पति को भी अपने कारोबार से जोड़ा है आज वह सब लखपति है। पति पहले पंजाब, हरियाणा, गुजरात, महाराष्ट्र और दक्षिण भारत के राज्यों में कमाने जाते थे लेकिन अब अपने गांव लौटकर पत्नी के साथ कारोबार संभाल रहे हैं। इसमें ज्वेलरी, हस्तशिल्प, सिलाई, नर्सरी और किराना दुकान शामिल है। इस तरह से आज जीविका दीदियां पलायन रोकने में मुख्य भूमिका अदा कर रही है।

कुछ जिलों में जीविका दीदी के पति वापस आए	
जिला	पति वापस आए
पटना	2 लाख 75 हजार
भागलपुर	1 लाख 90 हजार
मुजफ्फरपुर	1 लाख 78 हजार
गया	90 हजार
सीवान	86 हजार
मधुबनी	76 हजार

श्रोत –जीविका

ग्रामीण बिहार के महिलाओं के लिए 26 सितंबर 2025 का दिन ऐतिहासिक और अविस्मरणीय रहा, जब देश के प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी ऑनलाइन माध्यम से स्वयं सहायता समूह से जुड़ी महिलाओं को मुख्यमंत्री महिला रोजगार योजना के तहत 75 लाख महिलाओं के बैंक खाते में 10–10 हजार रुपए हस्तांतरित किये। यह आर्थिक सहायता राशि मात्र वित्तीय मदद नहीं है, बल्कि यह आत्मनिर्भरता स्वालंबन और सामाजिक सम्मान की एक नई शुरुआत का प्रतीक है। इस योजना के माध्यम से बिहार की महिलाएं सिलाई, बुनाई, खेती, पशुपालन जैसे छोटे और मध्यम व्यवसायों को शुरू कर सकेंगी, जिससे न केवल उनकी व्यक्तिगत आर्थिक स्थिति मजबूत होगी बल्कि पूरे परिवार और समाज को भी लाभ पहुंचेगा।

इस अध्ययन में महिलाओं के वितीय आत्मनिर्भरता में जीविका स्वयं सहायता समूह के प्रभाव का तुलनात्मक विश्लेषण किया गया। इसके लिए प्राथमिक डेटा संग्रहण भी अपनाई गई जिसमें भोजपुर जिला के कोइलवर प्रखंड के स्वयं सहायता समूह (SHG) की सदस्य और गैर सदस्य महिलाओं के साक्षात्कार और सर्वेक्षण के माध्यम से जानकारी प्राप्त की गई है। सर्वेक्षण में महिलाओं के आय, सामाजिक स्थिति, आत्मविश्वास और कौशल विकास से संबंधित विभिन्न पहलुओं का अध्ययन किया गया। डेटा का विश्लेषण सांख्यिकी विधियों जैसे प्रतिशत, औसत और मानक विचलन के माध्यम से किया गया। इसके अलावा गुणात्मक डेटा का विश्लेषण भी किया गया ताकि महिलाओं के अनुभव और दृष्टिकोण को समझा जा सके।

तालिका–डेटा विश्लेषण

दृष्टिकोण	जीविका स्वयं सहायता समूह सदस्य महिलाए	गैर सदस्य महिलाए
औसत मासिक आय	₹ 8,000/–	₹ 4,500/–
व्यवसाय भागीदारी (%)	82%	33%
सामाजिक स्थिति (%)	75%	45%
आत्मविश्वास स्तर उच्च (%)	80%	45%
कौसल विकास (%)	90%	32%

इस तालिका से स्पष्ट पता चलता है की जीविका स्वयं सहायता समूह के सदस्य महिलाओं की औसत मासिक गैर–सदस्य महिलाओं की तुलना में अधिक है। जीविका स्वयं सहायता समूह की महिलाएं अधिक संख्या में व्यवसाय में लगी हुई है और उनमें आत्मविश्वास और सामाजिक स्थिति में गैर–सदस्य महिलाओं की तुलना में सुधर हुआ है।

निष्कर्ष

इस अध्ययन से स्पष्ट हुआ है कि जीविका स्वयं सहायता समूह से जुड़कर ग्रामीण बिहार की महिलाएं आज वित्तीय आत्मनिर्भरता का मिसाल पेश कर रही है। एक समय था जब यह महिलाएं आर्थिक रूप से पूरी तरह अपने पति पर निर्भर थी। छोटी–छोटी जरूरत के लिए उन्हें दूसरों पर निर्भर रहना पड़ता था, लेकिन आज ये अपने परिवार का आर्थिक सहयोग कर रही है। अपने बच्चों को बेहतर शिक्षा दिला रही है और भविष्य के लिए बचत कर रही है। सामाजिक, राजनीतिक एवं शैक्षणिक गतिविधियों में बढ़–चढ़कर अपनी उपस्थिति दर्ज कर रही है तथा परिवार एवं समाज के निर्णय प्रक्रिया में अपना सहयोग कर रही है साथ ही देश की उन्नति में अपने योगदान दे रही हैं।

संदर्भ सूची

1. बिहार ग्रामीण आजीविका संवर्धन सोसाइटी (BRLPS) "JEEVIKA"Annual report –2022
2. Planning commission (भारत सरकार) "women empowerment through SGHs" 2023
3. सेन विनोद (2017) "बिहार की ग्रामीण अर्थव्यवस्था में महिला सहभागिता" - ग्रामीण विकास शोध जनरल
4. "JEEVIKA" दस्तावेज, बिहार सरकार (BRLPS) से प्राप्त क्षेत्रीय केश स्टडीज
5. दैनिक समाचार पत्र हिन्दुस्तान – दिनांक 09/06/25 पेज संख्या–09
6. दैनिक समाचार पत्र हिन्दुस्तान – दिनांक 29/06/25 पेज संख्या–01,09
7. दैनिक समाचार पत्र हिन्दुस्तान – दिनांक 27/09/25 पेज संख्या–01
8. BIHAR RURAL livelihood promotion society (Jeevika)Annual Report 2023–2024 पटना ग्रामीण विकास विभाग, बिहार सरकार।
9. जीविका समचार पत्रिका– माह सितम्बर, 2024
10. दैनिक समाचार पत्र हिन्दुस्तान–दिनांक 24/01/26 पेज संख्या–01